ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBBIL04292
RNI REG. NO. UPBBIL/2014/66218 **PP. NO.- 76-80**

I S S N N O .- 2 3 4 7 - 2 9 4 4 (Print)
I S S N N O .- 2 5 8 2 - 2 4 5 4 (Online)
Vol.-11, No.-II, Issues-14 YEAR- Dec. -2019

संस्कृत और अवेस्ता का तुलनात्मक अध्ययन– समानता और विषमता दोनों पक्षों में

सुप्रिया संजू

असि0 प्रोफे0–संस्कृत विभाग, एमिटी विश्वविद्यालय, मानेसर (हरियाणा) भारत

Received- 25.09.2019, Revised- 29.09.2019, Accepted - 05.10.2019 E-mail: archanasri2610@gmail.com

सारांश : *भावाभिव्यक्ति के साधनों को भाषा कहा जाता है। भाषा ही संसार की सर्वोत्कृष्ट ज्योति है, जो मानव के हृदय के अंधकार को दूर करती है। यह ज्ञान–ज्योति ही विश्व के समस्त मानवों का कार्य–कलाप सिद्ध करती है। यह कल्पना भी नहीं की जा सकती कि भाषा के बिना मानव की क्या दयनीय स्थिति होती, प्रसिद्ध भाषा – विज्ञानी आचार्य भर्तृहरि का कथन है कि भाषा ही ज्ञान को प्रकाशित करती है। भाषा के बिना किसी भी प्रकार का ज्ञान संभव नहीं है। आचार्य दण्डी ने भाषा की इस प्रकाशशीलता को ध्यान में रखते हुए कहा है कि यदि शब्द रूपी ज्योति संसार में न जलती तो संसार में चारों ओर अँधेरा ही रहता।*

कुंजी शब्द –भावाभिव्यक्ति, सर्वोतष्ट, कार्य–कलाप, ज्ञान–ज्योति, प्रकाशशीलता, हृदय, अंधकार, भारोपीय परिवार।

कतिपय ऐतिहासिक तथ्यों के आधार पर विश्व की प्रत्येक भाषा का आधार कोई न कोई मूल भाषा मानी गई है। भारोपीय परिवार की बात करें तो मूल–भाषा के रूप में एक ओर संस्कृत जो आर्य की भाषा रही, और दूसरी ओर ग्रीक और लैटिन से सम्बन्ध पाश्चात्य भाषाएँ बानी। आर्य–धारा का ही एक अंग अवेस्ता, पह्लवी, फारसी आदि के रूप में विकसित हुआ, ऐसा विद्वानों का मानना है। संस्कृत भाषा का परिचय होने से ही आर्य जाति, उसकी संस्कृति, जीवन और तथाकथित मूल आद्य आर्य भाषा से संबद्ध विषयों के अध्ययन का पश्चिमी विद्वानों को ठोस आधार प्राप्त हुआ। प्राचीन ग्रीक, लातिन, अवस्ता और ऋक्संस्कृत आदि के आधार पर मूल आद्य आर्य भाषा की ध्वनि, व्याकरण और स्वरूप की परिकल्पना की जा सकी। ग्रीक, लातिन आदि भाषाओं के साथ संस्कृत का पारिवारिक और निकट संबंध है, पर भारत–ईरानी–वर्ग की भाषाओं के साथ संस्कृत की सर्वाधिक निकटता है। भारत की सभी आद्य, मध्यकालीन एवं आधुनिक आर्य भाषाओं के विकास में मूलतः ऋग्वेद एवं तदुत्तरकालीन संस्कृत का आधारिक एवं औपादानिक योगदान रहा है।

ईरानी भाषा की गणना आर्य भाषाओं में ही की जाती है। भाषा–विज्ञान के आधार पर कुछ यूरोपीय विद्वानों का मत है कि आर्यों का आदि स्थान दक्षिण–पूर्वी यूरोप में कहीं था। इसी मत के अनुसार, जब आर्य अपने–अपने अन्य बन्धुओं का साथ छोड़कर आगे बढ़े तो कुछ लोग ईरान में बस गये तथा कुछ लोग और आगे बढ़कर भरत में आ बसे। भारत और ईरान–दोनों की ही शाखा होने के कारण, दोनों देशों की भाषाओं में पर्याप्त साम्य पाया जाता है। इन देशों के प्राचीनतम ग्रन्थ क्रमशः 'ऋग्वेद' तथा 'जेन्द अवेस्ता' हैं। जिस भाषा के माध्यम का आश्रय लेकर जरथुस्त्र धर्म (पारस इरान) का मूल धर्म का विशाल साहित्य निर्मित हुआ है उसे अवेस्ता कहते हैं। अवेस्ता या ''जेंद अवेस्ता'' नाम से भी धार्मिक भाषा और धर्म ग्रंथों का बोध होता है। 'जेन्द अवेस्ता' का निर्माण–काल लगभग 700 ई. पु. है, जबकि ऋग्वेद इससे सहस्रों वर्ष पूर्व रचा जा चुका था। 'जेन्द' की भाषा पूर्णतः वैदिक संस्कृत की अपभ्रंश प्रतीत होती है तथा इसके अनेक शब्द या तो संस्कृत शब्दों से मिलते–जुलते है अथवा पूर्णतः संस्कृत के ही हैं। इसके अतिरिक्त 'अवेस्ता' में अनेक वाक्य ऐसे हैं, जो साधारण परिवर्तन से संस्कृत के बन सकते हैं, संस्कृत और जिन्द में इसी प्रकार का साम्य देखकर प्रो० हीरेन ने कहा है कि जिन्द भाषा का उद्भव संस्कृत से हुआ है।

संस्कृत और अवेस्ता भाषा को आर्य परिवार की सर्वाधिक प्राचीन भाषा मानी जाती है। दोनों भाषाओं में इतनी अधिक समानता है कि इनको एक पृथक शाखा माना गया है। इसको भारत–ईरानी या हिन्द–ईरानी शाखा कहते हैं।

संस्कृत और अवेस्ता का तुलनात्मक अध्ययन– समानता और विषमता दोनों पक्षों में भावाभिव्यक्ति के साधनों को भाषा कहा जाता है। भाषा के अंतर्गत, पशु–पक्षियों की भाषा, संकेतित भाषा, इंगित भाषा और मानवीय व्यक्त भाषा सभी आते है। भाषा शब्द संस्कृत की भाष (भवादीगण) धातु से बना है। जिसका अर्थ है ''भाष्यते व्यक्तवाग रूपेण अभिव्यज्यते इति भाषा '' अर्थात व्यक्त वाणी के रूप में जिसकी अभिव्यक्ति की जाती है , उसे भाषा कहते हैं। तात्पर्य यह है कि भाषा वह है जिसके द्वारा मानव के सूक्ष्मातिसूक्ष्म भावों को प्रकट किया जा सकता है। भाषा के विषय में बतलाते हुए कपिल मुनि कहतें है –

स्फुटवाक्करणोपक्तो भावाभिव्यक्ति साधकाः।
संकेतितो ध्वनिव्रातः सा भाषेत्युच्चते बुधैः।।(कपिल मुनि)

भाषा ही संसार की सर्वोत्कृष्ट ज्योति है, जो मानव

अनुरूपी लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-11, No.-II, Issues-14 YEAR- Dec. -2019

के हृदय के अंधकार को दूर करती है। यह ज्ञान ज्योति ही विश्व के समस्त मानवों का कार्य–कलाप सिद्ध करती है। यह कल्पना भी नहीं की जा सकती कि भाषा के बिना मानव की क्या दयनीय स्थिति होती, प्रसिद्ध भाषा–विज्ञानी आचार्य भर्तृहरि का कथन है कि भाषा ही ज्ञान को प्रकाशित करती है। भाषा के बिना किसी भी प्रकार का ज्ञान संभव नहीं है।1 आचार्य दण्डी ने भाषा की इस प्रकाशशीलता को ध्यान में रखते हुए कहा है कि यदि शब्द रूपी ज्योति संसार में न जलती तो संसार में चारों ओर अँधेरा ही रहता।2

ऋग्वेद में भाषा को राष्ट्र निर्मात्री और संगमनी (संबद्ध करने वाली) कहा गया है।3 आचार्य भर्तृहरि ने भाषा को विश्वणिबंधनी अर्थात् विश्व को मिलाने वाली या जोड़ने वालो कहा है।4

ऐतरेय ब्राह्मण के अनुसार भाषा समुद्र के सकृश है, जिसप्रकार समुद्र कभी क्षीण नहीं होता है, उसी प्रकार भाषा भी कभी क्षीण नहीं होती है।5

भाषा के स्वरुप पर विचार करने से ज्ञात होता है की भाषा परम्परागत वस्तु है। यह परंपरा से मनुष्य को प्राप्त होती है और वह वंश–परम्परा से अग्रसर होती हुई चली जाती है। संस्कृत भाषा सहस्रों वर्षों से परम्परा से चली आ रही है। ऋग्वेद में भाषा की इस परम्पर का कारण बतलाते हुए कहा गया है कि भाषा हृद्य होती है। यह मनोरम होने के साथ हृदयपक्ष को प्रभावित करती है। अतएव एक भाषा–भाषियों में धर्मभेद, जातिभेद आदि होने पर भी एकता रहती है। ऋग्वेद में विभिन्न भाषाओं की सीमाबद्धता को व्रज कहते हुए 'शतव्रजाः' सैकड़ों बाड़ों वाली कहा है, अर्थात भाषाओं के सैकड़ों वर्ग हैं।6 जिस प्रकार नदी की गतिशीलता नदी के जल को पवित्र एवं शुद्ध रखती है, उसी प्रकार भाषा की गतिशीलता भी भाषा को पवित्र रखती है।

कतिपय ऐतिहासिक तथ्यों के आधार पर विश्व की प्रत्येक भाषा का आधार कोई न कोई मूल भाषा मानी गई है। भारोपीय परिवार की बात करें तो मूल–भाषा के रूप में एक ओर संस्कृत जो आर्य की भाषा रही, और दूसरी ओर ग्रीक और लैटिन से सम्बन्ध पाश्चात्य भाषाएँ बानी। आर्य–धारा का ही एक अंग अवेस्ता, पह्लवी, फारसी आदि के रूप में विकसित हुआ, ऐसा विद्वानों का मानना है। संस्कृत भाषा का परिचय होने से ही आर्य जाति, उसकी संस्कृति, जीवन और तथाकथित मूल आद्य आर्य भाषा से संबद्ध विषयों के अध्ययन का पश्चिमी विद्वानों को ठोस आधार प्राप्त हुआ। प्राचीन ग्रीक, लातिन, अवस्ता और ऋक्संस्कृत आदि के आधार पर मूल आद्य आर्य भाषा की ध्वनि, व्याकरण और स्वरूप की परिकल्पना की जा सकी। ग्रीक, लातिन आदि भाषाओं के साथ संस्कृत का पारिवारिक और निकट संबंध है, पर भारत–ईरानी–वर्ग की भाषाओं के साथ संस्कृत की सर्वाधिक निकटता है। भारत की सभी आद्य, मध्यकालीन एवं आधुनिक आर्य भाषाओं के विकास में मूलतः ऋग्वेद एवं तदुत्तरकालीन संस्कृत का आधारिक एवं औपादानिक योगदान रहा है।

ईरानी भाषा की गणना आर्य भाषाओं में ही की जाती है। भाषा–विज्ञान के आधार पर कुछ यूरोपीय विद्वानों का मत है कि आर्यों का आदि स्थान दक्षिण–पूर्वी यूरोप में कहीं था। इसी मत के अनुसार जब आर्य अपने–अपने अन्य बन्धुओं का साथ छोड़कर आगे बढ़े तो कुछ लोग ईरान में बस गये तथा कुछ लोग और आगे बढ़कर भरत में आ बसे। भारत और ईरान–दोनों की ही शाखा होने के कारण, दोनों देशों की भाषाओं में पर्याप्त साम्य पाया जाता है। इन देशों के प्राचीनतम ग्रन्थ क्रमशः 'ऋग्वेद' तथा 'जेन्द अवेस्ता' हैं। जिस भाषा के माध्यम का आश्रय लेकर जरथुस्त्र धर्म (पारस इरान) का मूल धर्म का विशाल साहित्य निर्मित हुआ है उसे अवेस्ता कहते हैं। अवेस्ता या ''जेंद अवेस्ता'' नाम से भी धार्मिक भाषा और धर्म ग्रंथों का बोध होता है। 'जेन्द अवेस्ता' का निर्माण–काल लगभग 700 ई. पु. है, जबकि ऋग्वेद इससे सहस्रों वर्ष पूर्व रचा जा चुका था। 'जेन्द' की भाषा पूर्णतः वैदिक संस्कृत की अपभ्रंश प्रतीत होती है तथा इसके अनेक शब्द या तो संस्कृत शब्दों से मिलते–जुलते है अथवा पूर्णँतः संस्कृत के ही हैं। इसके अतिरिक्त 'अवेस्ता' में अनेक वाक्य ऐसे हैं, जो साधारण परिवर्तन से संस्कृत के बन सकते हैं, संस्कृत और जिन्द में इसी प्रकार का साम्य देखकर प्रो० हीरेन ने कहा है कि जिन्द भाषा का उद्भव संस्कृत से हुआ है।

संस्कृत और अवेस्ता भाषा को आर्य परिवार की सर्वाधिक प्राचीन भाषा मानी जाती है। दोनों भाषाओं में इतनी अधिक समानता है कि इनको एक पृथक शाखा माना गया है। इसको भारत–ईरानी या हिन्द–ईरानी शाखा कहते हैं।

वैदिक–संस्कृत और अवेस्ता– भारत की प्राचीनतम भाषा वैदिक संस्कृत है। ईरान की प्राचीन भाषा अवेस्ता है। ईरानियों के धर्मग्रन्थ का नाम भी अवेस्ता है अवेस्ता संस्कृत अवस्था का अपभ्रंश है , जिसका अर्थ है– व्यवस्थित और परिनिष्ठित रूप। अतः अवेस्ता शब्द धर्मग्रन्थ का वाचक है जेन्द (मदक) शब्द छन्दस का अपभ्रंश है। इसका अर्थ है–टीका, व्याख्या। अवेस्ता की टीका को जेन्द कहते है। यह पह्लवी भाषा में है। टीका –साहित्य धर्म ग्रन्थ को 'जेन्दावेस्ता '(मदक–अमेजं)

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-11, No.-II, Issues-14 YEAR- Dec. -2019

कहते है। ' अवेस्ता ' धर्मग्रन्थ की भाषा, शब्दावली , रचना, छन्दयोजना और भाववालि वैदिक मन्त्रों से बहुत अधिक मिलती है। संस्कृत और अवेस्ता के ध्वनि–नियमों को जाननेवाला कोई भी संस्कृतज्ञ वेद के मन्त्र को अवेस्ता में और अवेस्ता की गाथाओं को वैदिक मन्त्र के रूप में परिवर्तित कर सकता है। यथा–डॉ0 हाउग द्वारा उद्धृत अवेस्ता का यस्न ३१ , गाथा ८ का संस्त रूपान्तर और अर्थ–अवेस्ता संस्कृत अर्थ Vispa drukhsh janaitk विश्वो दुरक्षो जिन्वति सभी दुरात्मा भागते हैं Vispa drukhsh nashaiti विश्वो दुरक्षो नश्यति सभी दुरात्मा नष्ट होते है Yatha hanoti aisham Vacham यदा श्रृणोति एतां वाच जब इस बात को सुनते हैं।

भाषा विज्ञान के अनुसार आर्य शाखा के अंतर्गत विद्यमान संस्कृत और अवेस्ता, भाषा–जगत में विकास की दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण भाषा है। इसके कारणों पर हम जब विचार करते है तो इन दो भाषाओं के महत्व को प्रदर्शित करता हुआ अनेक महत्वपूर्ण बिन्दु हमारे समक्ष आ जातें हैं–

संस्कृत और अवेस्ता भाषा का महत्त्व –

१. प्राचीन साहित्य– संस्कृत भाषा में विश्व का प्राचीनतम साहित्य ऋग्वेद उपलब्ध है। समस्त वैदिक साहित्य इसी शाखा में प्राप्य है। वैदिक साहित्य है समय ४ हजार ई. पू. से १ हजार ई. पू. मन जाता है। अवेस्ता भाषा में लिखी गई अवेस्ता धर्मग्रन्थ ७०० ई. पू. के लगभग प्राचीन है। जो ऐसी आर्य शाखा के अंतर्गत आतें है।

2. भाषा विज्ञान का जन्मदाता – यूरोप में संस्कृत और अवेस्ता के तुलनात्मक अध्ययन ने ही तुलनात्मक भाषाविज्ञान को जन्म दिया है।

३ प्राचीन वर्णमाला और ध्वनियाँ– संस्कृत और अवेस्ता द्वारा मूल भारोपीय भाषा के ध्वनि और वर्णो के निर्धारण में एक महत्वपूर्ण भूमिका है।

४. प्राचीनतम संस्कृति और सभ्यता – विश्व की प्राचीनतम संस्कृति और सभ्यता का सर्वांगीण इतिहास संस्कृत और अवेस्ता भाषा के साहित्य में ही प्राप्त होता है

५ भाषाशास्त्रीय देन– भाषाशास्त्र को ध्वनि–विज्ञान (शिक्षा), पद–विज्ञान (व्याकरण) और अर्थविज्ञान (निरुक्त)का मौलिक आधार संस्कृत से ही प्राप्त हुआ है।

संस्कृत और अवेस्ता भाषा में समानताएँ–

भारत और ईरान–दोनों की एक ही शाखा होने के कारण, दोनों देशों की भाषाओं में पर्याप्त साम्य पाया जाता है। इन देशों के प्राचीनतम ग्रन्थ क्रमशः 'ऋग्वेद' तथा 'जेन्द अवेस्ता' हैं। 'जेन्द अवेस्ता' का निर्माण–काल लगभग शती ई. पु. है, जबकि ऋग्वेद इससे सहस्रों वर्ष पूर्व रचा जा चुका था। 'जेन्द' की भाषा पूर्णतः वैदिक संस्कृत की अपभ्रंश प्रतीत होती है तथा इसके अनेक शब्द या तो संस्कृत शब्दों से मिलते–जुलते है अथवा पूर्णतः संस्कृत के ही हैं। इसके अतिरिक्त 'अवेस्ता' में अनेक वाक्य ऐसे हैं, जो साधारण परिवर्तन से संस्कृत के बन सकते हैं, संस्कृत और जिन्द में इसी प्रकार का साम्य देखकर प्रो० हीरेन ने कहा है कि जिन्द भाषा का उद्‌भव संस्कृत से हुआ है।

पहलवी और वौदिक संस्कृत लगभग समान 'मित्र' और 'मिथ्र' की स्तुतियां एक–से शब्दों में हैं। प्राचीन काल में दोनों देशों के धर्मो और भाषाओं की भी एक–सी ही भूमिका रही है।

भारोपीय भाषा के स्वरों और व्यंजनों के साथ संस्कृत और अवेस्ता भाषा की तुलना करने पर निम्न परिवर्तन दृष्टिगोचर होते है, यथा–

1. भारोपीय स्वर ' अ ' संस्कृत और अवेस्ता में 'इ' हो गया–भारोपीय–'पते' संस्कृत और अवेस्ता में 'पिता' हो गया।

2. भारोपीय इ, उ, र, क के बाद आने वाला से संस्कृत में ष और अवेस्ता में श होता है– यथा–संस्कृत में 'तिष्ठामि' और अवेस्ता में 'हिश्तइति'

3. अवेस्ता और संस्कृत के शब्दरूप और धातु रूप की ओर दृष्टि डालें तो यह ज्ञात होता है की अवेस्ता में संस्कृत के तुल्य ही शब्दरूप चलते है। अवेस्ता में ८ कारक (कर्ता, कर्म आदि), तीन वचन और तीन लिंग हैं। कारक–चिन्ह भी प्रायः समान ही हैं, जैसे–एकवचन और बहुवचन के कारक चिन्ह .

	संस्कृत	अवेस्ता
प्रथमा–ओ	स् –अः	स्
द्वितीय–आ	अम् –अः	म्
तृतीया–बिश	आ – भिः	आ
चतुर्थी–ब्यो	ए –भ्यः	ए –
पंचमी–भ्य	अत् – भ्यः	अत्–ब्यो
षष्ठी–आम	स्य – आम्	ह्य
सप्तमी– शु	इ –सु	इ

4. कारकों के प्रयोग भी प्रायः सामान ही हैं।

5. अवेस्ता में भी संस्कृत के तुल्य विशेषणों के रूप विशेष्य के तुल्य ही चलते हैं।

6. अवेस्ता में भी संस्कृत के तुल्य संख्याएँ और संख्येय (प्रथम आदि) शब्द मिलते–जुलते हैं। संस्कृत – एकः, द्वौ, त्रयः,चत्वारः, पञ्च आदि। अवेस्ता – अएव, द्वा, त्रि, चथ्वर, पंच, श्वश, हप्त,अश्ट, नव, आदि।

7. सर्वनाम शब्दों में भी अधिकांश में साम्य है। युष्मद् , अस्मद् के तुल्य रूप मिलते हैं।

PIF/4.005 *ASVS Reg. No. AZM 561/2013-14*

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-11, No.-II, Issues-14 YEAR- Dec. -2019

अजम (अहम्), मा (माम्), मत् (मत्), मे (मे) । तूम (त्वम्), थ्वम् (त्वाम्)।

8. अवेस्ता में वाच्य, काल वृति, (उववक), लेट् लकार का प्रयोग आदि वैदिक संस्त के स.श हैं। तुमन, ल्यप, वाले रूप भी हैं। इनके प्रयोग में भी समानता है। परस्मैपद और आत्मनेपद वाले तिङ् प्रत्यय भी हैं। यथा–पस्मैपद–ति , हि, मि अवेस्ता में और संस्कृत में–ति, सि, मि।

9. अवेस्ता में भी संस्कृत के तुल्य १० गण हैं। इसमें भी विकरण (अ, य, अय, आदि) और अविकरण (शप, श्यन ,श्नु,श्नम, श्ना आदि के तुल्य अ, य, अय, नु, न, ना, उ आदि विकरण हैं। लोट, विधिलिंग आदि के अतिरिक्त लेट् (वैदिक लकार) के भी रूप मिलते हैं।

10. अवेस्ता में लृट (भविष्यत्) में संस्कृत के तुल्य 'स्य' का ह्य विकरण मिलता है।

11. अवेस्ता में संस्कृत के तुल्य कर्मवाच्य, णिजन्त, सन्नन्त, यङन्त, नामधातु आदि हैं।

12 अवेस्ता में संस्कृत के तुल्य शतृ, त–इत–न, ल्यप, तुमुन, अर्थ वाले वैदिक प्रत्यय–तुम, ध्यै, तयै, असे आदि भी मिलते हैं।

भाषा के अतिरिक्त वेद और अवेस्ता के धार्मिक तथ्यों में भी पार्याप्त समानता पाई जाती है। दोनों में ही एक ईश्वर की घोषणा की गई है। उनमें मन्दिरों और मूर्तियों के लिए कोई स्थान नहीं है। इन दोनों में वरुण को देवताओं का अधिराज माना गया है। वैदिक 'असुर' ही अवेस्ता का 'अहर' है। ईरानी 'मज्दा' का वही अर्थ है, जो वैदिक संस्कृत में 'मेधा' का। वैदिक 'मित्र' देवता ही 'अवेस्ता' का 'मिथ्र' है। वेदों का यज्ञ 'अवेस्ता' का 'यस्न' है। वस्तुतः यज्ञ, होम, सोम की प्रथाएं दोनों देशों में थीं। अवेस्ता में 'हत हिन्दु' और ऋग्वेद में 'आर्याना' का वर्णन मिलता है।

संस्कृत और अवेस्ता की विषमता–संस्कृत और अवेस्ता भाषा में अनेक समानता के साथ साथ विषमताएं भी हैं।

१. **मात्राभेद –** दोनों भाषाओँ में स्वरमात्राओं में भेद मिलता है। संस्कृत अवेस्ता, अथ अथा, ऋतुम रतूम

2. उदासीन स्वर– संस्कृत के अ और आ के स्थान पर अवेस्ता में उदासीन स्वर मिलता है। यथा–संस्कृत के सन्ति का अवेस्ता में हन्ति होता है।

3. संस्कृत का ए अवेस्ता में अए होता है। यथा–वेद (वएदा)

4. संस्कृत ओ अवेस्ता में अओ होता है– होता जहोता

5. संस्कृत का ऐ और औ अवेस्ता में अइ (प), और अउ देवैः–दएवइश, गौः–गउश

6. अवेस्ता में स्वर – समुदाय का प्रयोग अधिक है। संस्कृत ए, ओ, ऐ, औ, के स्थान पर क्रमशः अए, अओ, आइ, आउ मिलते हैं।

7. संस्कृत ऋ के स्थान पर अर, र या अ मिलता है, यथा–कृणोति–करनओति

8. अपिनिहिति अवेस्ता की मुख्य विशेषता है। इसमें शब्द के आदि या मध्य में इ या उ लग जाता है, यथा–
भवति – बवइति, रिणक्ति –इरिनख्ति

9. संस्कृत के क्, त्, प् क्रमशः संघर्षी ख, थ ,फ हो जाते हैं, यथा –
क्रतुः–ख्रतुश, सत्य–हइथ्यो , स्वप्नम्–हुअनम् ,

10. संस्कृत का घ्, ध्, भ् अवेस्ता में ग्, द्, ब् हो जाता हैं, यथा–
जंघा – जंगा , धारयत् – दारयत् , भूमि – बूमि।

11. संस्कृत के स अवेस्ता ह हो गया। यथा–
सिन्धु – हिन्दु, असुर–अहुर, सोम–होम, सप्त–हप्त, सप्ताह – हता

12. अवेस्ता में चवर्ग में से केवल च, ज् है।

13. अवेस्ता में टवर्ग सर्वथा नहीं है।

14. अवेस्ता में नासिक्य ध्वनियाँ ङ् , न् ,म् है, ञ् , ण् नहीं।

15. अवेस्ता में ल नहीं है उसके स्थान पर र हैं।

16. कवर्ग आदि वर्गों के चतुर्थ वर्ण अवेस्ता में नहीं हैं।

17. अवेस्ता में अंतिम स्वर दीर्घ हो जाता है। यथा–
असुर – अहुरा , असि – अही।

18. संस्कृत के एकाक्षर निपात दीर्घ हो जाते है। यथा–
नु – नू , प्र – फ्रा।

19. अंतिम म् से पूर्ववर्ती संस्कृत के उ, इ अवेस्ता में दीर्घ हो जातें है, यथा –
पतिम् – पइतीम।

निष्कर्ष– संस्कृत और अवेस्ता भाषा के तुलनात्मक अध्ययन से दोनों भाषाओँ में समानता और विषमता दृष्टिगोचर होतें है, भाषा के साथ–साथ भारत और ईरान की संस्कृति धर्म में भी अत्यधिक समानता है। जैसे, सार्वत्रिक बल 'ऋक' (वैदिक) तथा अवेस्ता का 'आशा', पवित्र वृक्ष तथा पेय 'सोम' (वैदिक) एवं अवेस्ता में 'हाओम', मित्र (वैदिक), अवेस्तन और प्राचीन पारसी भाषा में 'मिथ्र' भग (वैदिक), अवेस्ता एवं प्राचीन पारसी में 'बग' ईरानी भाषा की गणना आर्य भाषाओं में ही की जाती है। भाषा–विज्ञान के आधार पर कुछ यूरोपीय विद्वानों का मत है कि आर्यों का आदि स्थान दक्षिण–पूर्वी यूरोप में कहीं था।

भारत और ईरान–दोनों की ही शाखा एक है। इन देशों के प्राचीनतम ग्रन्थ क्रमशः 'ऋग्वेद' तथा 'जेन्द अवेस्ता' हैं। 'जेन्द' की भाषा पूर्णतः वैदिक संस्कृत की अपभ्रंश प्रतीत होती है। तथा इसके अनेक शब्द या तो

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-11, No.-II, Issues-14 YEAR- Dec. -2019

संस्कृत शब्दों से मिलते–जुलते है अथवा पूर्णतः संस्कृत के ही हैं। इसके अतिरिक्त 'अवेस्ता' में अनेक वाक्य ऐसे हैं, जो साधारण परिवर्तन से संस्कृत के बन सकते हैं, संस्कृत और जिन्द में इसी प्रकार का साम्य देखकर प्रो० हीरेन ने कहा है कि जिन्द भाषा का उद्‌भव संस्कृत से हुआ है। भाषा के अतिरिक्त वेद और अवेस्ता के धार्मिक तथ्यों में भी पार्याप्त समानता पाई जाती है। दोनों में ही एक ईश्वर की घोषणा की गई है। उनमें मन्दिरों और मूर्तियों के लिए कोई स्थान नहीं है। परन्तु कालान्तरण में अहुर–मज्द की मूर्तियाँ भी बनायी गयी हैं ।इन दोनों में वरुण को देवताओं का अधिराज माना गया है। वैदिक 'असुर' ही अवेस्ता का 'अहुर' है। ईरानी 'मज्दा' का वही अर्थ है, जो वैदिक संस्कृत में महत् का।

वैदिक 'मित्र' देवता ही 'अवेस्ता' का 'मिथ्र' है। वेदों का यज्ञ 'अवेस्ता' का 'यस्न' है। वस्तुतः यज्ञ, होम, सोम की प्रथाएं दोनों देशों में थीं। अवेस्ता में 'हत हिन्दु' और ऋग्वेद में 'आर्याना' का वर्णन मिलता है पहलवी और वौदिक संस्कृत लगभग समान 'मित्र' और 'मिथ्र' की स्तुतियां एक–से शब्दों में हैं।

सांस्कृतिक और धार्मिक समानता के अतिरिक्त भाषा में कुछ भिन्नताएं प्रतिबिंबित होती है दोनों भाषाओं में किंतु तथापि भाषा के क्षेत्र में भी समानताओं का बाहुल्य है। इस आधार पर हम एक कह सकतें हैं की संस्कृत और अवेस्ता भाषा और संस्कृति में अत्यधिक समानता है और ये दोनों ही भाषाएं आर्य परिवार की सर्वाधिक समृद्ध भाषा है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. वागरूपता चेन्निष्क्रामेदवबोधस्य शाश्वती ।
न प्रकाशः प्रकाशेत सा हि प्रत्यवमर्शिनी ।।
वाक्यपदीय १–१०५
2. इदमन्धन्तमः .त्स्नं जायेत भुवनत्रयम् ।
यदि शब्दाह्वयं ज्योतिरासंसारं न दीप्यते।।
काव्यादर्श १–४
3. अहं राष्ट्री संगमनी वसुनाम्। (ऋग्वेद–१०–१५–३)
4. शब्दष्वेवाश्रिता शक्तिर्विश्वस्यास्य निबन्धनी।
(वाक्यपदीय १–११६)
5. वाग् वै समुद्रो न वै वाक् क्षीयते, न समुद्रः क्षीयते।
(ऐतरेय. ५–१६)
6. एता अर्षन्ति ह्रदयात् समुद्राच्छतव्रजाः। ऋग्वेद ४ –५८– ५

*****